

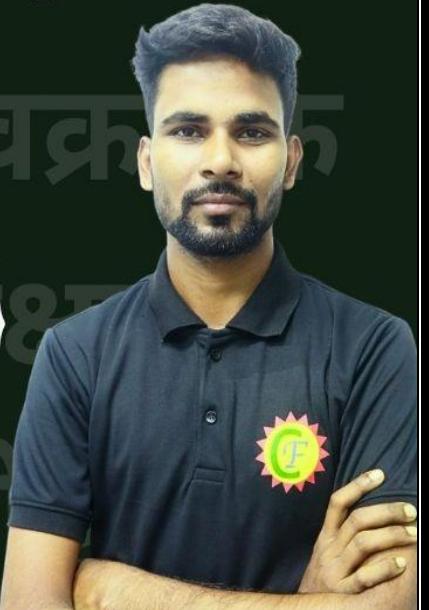
हिंदी व्याकरण

अलंकार

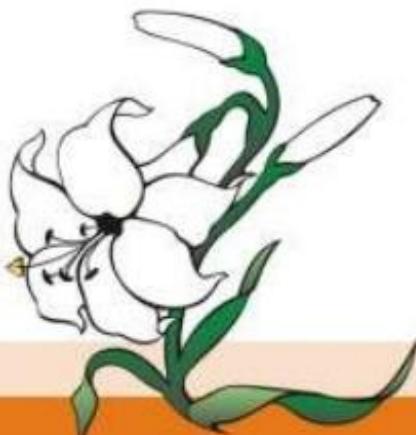
कभी नहीं भूलोगे

•LIVE ▶ 2PM

BY- PANKAJ SIR



अलंकार



- ❖ काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्वों को अलंकार कहा जाता है।
- ❖ अलंकार प्रवृति के जनक आ० भामह को माना जाता है ।

अलंकार तीन प्रकार के होते हैं।

- (i) शब्दालंकार –
- (ii) अर्थालंकार
- (iii) उभयालंकार

(1) **शब्दालंकार** :— जिस अलंकार में शब्दों के माध्यम से काव्य को सजाया जाता है। उसे शब्दालंकार कहते हैं।

जैसे :— अनुप्रास , यमक , श्लेष , वक्रोक्ति आदि ।

(क) अनुप्रास अलंकार :— जहाँ एक ही वर्ण की आवृत्ति लगातार कई बार होती है वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

जैसे :— जय जय भारत भूमि भवानी ।
अमरों ने भी तेरी महिमा बारम्बार
बरवानी ॥

अनुप्रास अलंकार के 5 भेद हैं।

(i) छेकानुप्रास — जहाँ कोई वर्ण लगातार दो बार आए।

— सुर समर करनी करहिं

(ii) वृत्यानुप्रास अलंकार — जहाँ एक ही वर्ण की आवृत्ति लगातार दो से अधिक बार आये।

— भूरी—भूरी भेदभाव भूमि से भाग दिया।

(iii) लाटानुप्रास अलंकार – जब किसी वाक्य या उपवाक्य की आवृत्ति उसी अर्थ में होती है किन्तु उसके मूल अर्थ में अंतर होता है।

- उसे रोको, मत जाने दो।
उसे रोको मत, जाने दो ॥

(iv) अन्त्यानुप्रास अलंकार :— जब किसी पंक्ति में अंतिम अक्षर की आवृत्ति लगातार होती है, वहाँ अन्त्यानुप्रास अलंकार होता है।

- प्रभु जी तुम दीपक हम बाती।
जाकी जोति बरे दिन राती ॥

(v) श्रुत्यानुप्रास अलंकार :— जब एक ही वर्ग (माधुर्य वर्ग) के वर्णों की आवृत्ति बार—बार होती है।

- दिनांत था थे दीनाणाथ डुबते । सधेनु आते गृह ग्वाल बाल थे।

(ख) श्लेष (चिपका हुआ) अलंकार :- जब कोई शब्द एक ही बार प्रयोग में आया हो किन्तु प्रसंग के अनुसार उसके दो या दो से अधिक अर्थ हो वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

— पानी गये न उबेरे, मोती मानुष चुन ॥

(ग) यमक अलंकार :- जब कोई शब्द दो या दो से अधिक बार प्रयोग में आया हो तथा हर बार उसे अर्थ अलग—अलग हो वहाँ यमक अलंकार होता है।

— कनक —कनक ते सौ गुनी , मादकता अधिकाय ।
यही खाये बौराय जग , या पाये बौराय ॥

(घ) वक्रोक्ति अलंकार :- जब किसी वाक्य में वक्ता के कथन का आशय किसी दूसरे अर्थ में लिया जाता है वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है।

— देते है वरदान शिव भाव चाहिए मीत,
भोले को वरदान हित भाव चाहिए मीत

(2) अर्थालंकार :- जब किसी काव्य में उसके अर्थ के द्वारा सजाया या अलंकृत किया जाता है वहाँ अर्थालंकार होता है।

उपमेय :- वह मुख्य वस्तु जिसके विषय में बात हो रही है। (मानव शरीर के अंग / भाव)

उपमान :- वह वस्तु जिससे मुख्य वस्तु की तुलना हो रही है। (प्राकृतिक वस्तु)

(i) उपमा अलंकार :- जहाँ उपमेय में उपमान की समानता बताई जाए। "अर्थात् जहाँ मुख्य वस्तु को किसी दुसरी वस्तु के समान बताया जाता है वहाँ उपमा अलंकार होता है।

जैसे :- राधा बदन चंद्र सो सुन्दर ।

(ii) रूपक अलंकार :- जहाँ उपमेय में उपमान का आरोप किया जाये अर्थात् जब मुख्य वस्तु उपमान का रूप ले ले वहाँ रूपक अलंकार होता है।

— पायो जी मैंने राम—रतन धन पायो।

(iii) उत्प्रेक्षा अलंकार :- “जहाँ उपमेय में उपमान की कल्पना की जाय।”

— उस काल के मारे क्रोध के तन काँपने उसका लगा।

मानो हवा के वेग से सोता हुआ सागर जगा।।

(iv) अतिश्योक्ति अलंकार :- किसी बात को बढ़ा चढ़ाकर पेश किया जाना अतिश्योक्ति अलंकार कहलाता है।

—इतना रोया था मैं उस दिन ताल तलैया सब भर डाले ।

(v) संदेह अलंकार – जहाँ उपमेय के लिए दिए गए उपमानों में सन्देह बना रहे तथा यह निश्चित न किया जा सके कि वास्तविक स्थिति क्या है वहाँ सन्देह अलंकार होता है।

- भूखे नर को भूलकर , हरी को देते भोग ।
पाप हुआ या पुण्य यह , करु हर्ष या सोग ॥

